★ जेरेमी बेन्थम

1- जेरेमी बेन्थम उपयोगितावाद के जनक के रूप में पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तन में प्रतिस्थापित हैं।

2- उपयोगितावाद की स्पष्ट व्याख्या सबसे पहले अंग्रेज दार्शनिक दार्शनिक डेविड ह्यूम ने की थी। डेविड के बाद हैलवेसियम तथा हलबास ने इस सिद्धांत को आगे बढ़ाया। लेकिन इस समय तक उपयोगितावाद की व्याख्या में तार्किक आधारों का अभाव था।

3- बेन्थम ने उपयोगितावाद की परिभाषा इस प्रकार दी - उपयोगिता किसी वस्तु का वह गुण है जिसके द्वारा वह किसी ऐसे पक्ष के लिए लाभ, सुविधा, सुख, अच्छाई या कल्याण का सृजन करती है और ऐसे पक्ष के विरुद्ध होने वाले हल, पीड़ा, बुराई को रोकने का कार्य करती है जिसके हित के बारे में विचार किया जा रहा है।

4- बेन्थम नैतिकता की परम्पराओं का खण्डन करता है तथा सुखवाद में विश्वास करता है। और मानता है कि सुख-दुःख अथवा आनंद और पीड़ा मनुष्य के दो सर्वभौमिक शासक है।

5- बेन्थम के अनुसार प्रकृति ने मनुष्य को आनन्द और पीड़ा नामक दो सर्वोच्च प्रभुओं के शासन में रखा है। हम जो कुछ भी करते हैं, जो कुछ कहते हैं, जो कुछ भी सोचते हैं सभी में हम इनके अधीन हैं।

6- बेन्थम का मत है कि जो वस्तु सुख की अनुभूति प्रदान करती है वह अच्छी, ठीक तथा उपयोगी है।

7- बेन्थम ने सुख-दुख को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया है- सामान्य सुख, सामान्य दुख, जटिल सुख और जटिल दुख।

8- बेन्थम सुख-दुख की प्राप्ति के चार स्त्रोत मानता है - भौतिक, नैतिक, राजनीतिक तथा धार्मिक।

9- बेन्थम ने सुख की मात्रा का निर्धारण करने के लिए सुखवादी मापक यंत्र का प्रतिपादन किया है। जिसके अनुसार सुखो और दुखो को तुलनात्मक ढंग से कुछ कसौटियो पर कसा जा सकता है।

10- यह कसौटिया इस प्रकार है- तीव्रता, स्थिरता, निश्चितता, विस्तार आदि।

11- बेन्थम सुखवादी में केवल संख्या मात्रात्मक श्रेष्ठता का विधान करता है, और गुण की दृष्टि में सभी सुख समान है।

12- बेन्थम के अनुसार राज्यों के आदेशों का पालन इसलिए आवश्यक होता है क्योंकि यह उपयोगी है और सामान्य हित एवं सुख में वृद्धि करने वाले है।

13- बेन्थम का मत है कि विधि निर्माण में उपयोगिता के सिद्धांत के अनुकूल किया जाना चाहिए। यदि राज्य के कानून उपयोगिता की कसौटी पर खरे न उतरें तो उन्हें बदल देना चाहिए।

बेन्थम के उपयोगितावाद और सुखमापक यंत्र सम्बन्धी विचारों की आलोचना

1- भौतिकतावाद पर आधारित।
2- सुखवाद धारणा भ्रमपूर्ण है।
3- नैतिकता की उपेक्षा।
4- अधिकतम संख्या का अधिकतम सुख असंगत।
5- मनुष्य की प्रकृति का गलत आकलन।
6- सुख भौतिक नहीं मानसिक होता है।

★ राजनीति विज्ञान का क्षेत्र

1- राजनीति विज्ञान अध्ययन का विस्तृत विषय या क्षेत्र है। राजनीति विज्ञान में ये तमाम बातें शामिल हैं- राजनीतिक चिंतन, राजनीतिक सिद्धांत, राजनीतिक दर्शन, राजनीतिक विचारधारा, संस्थागत या संरचनागत ढाँचा, तुलनात्मक राजनीति लोक प्रशासन, अंतर्राष्ट्रीय कानून और संगठन आदि।

2- राजनीतिक शास्त्र: सरकार के अध्ययन के रूप में

लीकॉक के अनुसार- राजनीतिक शास्त्र सरकार से सम्बद्ध अध्ययन है।

3. राजनीतिक शास्त्र: राज्य व सरकार दोनों के अध्ययन के रूप में-

राजनीतिक शास्त्र में केवल राज्य या सरकार का अध्ययन किया जाना चाहिए बल्कि इन दोनों संस्थाओं (राज्य और सरकार) का अध्ययन किया जाना चाहिए। राज्य के अभाव में सरकार का अध्ययन और सरकार के अभाव में राज्य का अध्ययन नहीं किया जा सकता है।